

संस्कृत में 'जागरण के युग' की शुरुआत हुई। तर्कवाद तथा अन्वेषण

18वीं शताब्दी के यूरोप में "जागरण के युग" की शुरुआत हुई। तर्कवाद तथा अन्वेषण

18वीं शताब्दी के यूरोप में "जागरण के युग" की शुरुआत हुई। तर्कवाद तथा अन्वेषण

आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में इस बुद्धिजीवी वर्ग की निर्णायक भूमिका

की बात करें तो पाते हैं कि अंग्रेजी शासन की स्थापना ने भारत के राजनीतिक, आर्थिक

दुष्प्रचार था, जिसकी मान्यता थी कि भारत में ईसाई धर्म के प्रचार से ब्रिटिश

शताब्दी में बौद्धिक चेतना

ds iHkko ds dkj.k Hkkjr ea cf) thoh ,oa tkx: d oxl dk fodkl gqvk] ftl ds फलस्वरूप समाज सुधार आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार हुई। अनेद cf) thfo; ka us l ekt e] vLi”यता के कोढ़ को पहचाना। 19वीं शताब्दी में ऐसे कई सामाजिक सांस्कृतिक vkUnkyu gq] ftudk mī”s; Hkkjrh; l kldfrd vkj ikjLifjd l LFkkvka ea l qkkj djuk rFkk mudks uothou inku djuk FkkA cgk l ekt rFkk vk; l ekt us Hkh वस्पृष्यता को माना और अमान्य ठहरक; k vkj l kekfud l ekurk dk ifriknu fd; kA

jktk jkeekgu jk; vkj cā l ekt %&

jktk jkeekgu jk; oLr% iztkra=oknh vkj ekuorkoknh Fk muds uohu fopkka के कारण ही 19वीं शताब्दी के भारत में पुनर्जागरण का जन्म हुआ। mlga ^vrhr vkj भविष्य के मध्य सेतु “भारतीय” राष्ट्रवाद का जनक\* vkj ^vk/kfud Hkkjr ds fi rk^ dk l Eeku ikr gA

cakly ds gqyhi ftys ea flFkr jk/kkuxj ea 22 ebl 1772 bD dks jktk jke ekgujk; dk tle gqvkA jktk jkeमोहन राय कई भाषाओं के ज्ञाता थे, ftuea iæq[k Fkh अरबी, फारसी, संस्कृत जैसी प्राच्य भाषायां rFkk vaxsthi Ykd hl h] yfVu] ; ukuh vkj fgca t] h i k”चात्य भाषाये।<sup>2</sup>

20 vxLr 1828 dks jktk jke ekgujk; us cgk l ekt dh LFkki uk dhA cgk l ekt dh LFkki uk dk mī”s; Fkk ,d’ojokn dh mikl uk] efrz wtk dk fojksk i jkfgrokn dk fojksk] vorkjokn dk [k.Mu vkfnA jktk jke ekgu jk; }kj k Hkkjr ea vk/kfud f”k{kk ,oa l kfgR; ds l j {k.k ,oa fodkl grq fd; s x; s dk; k dk fo”लेषण किया गया है। यद्यपि भारत में अंग्रेजी शासन के पचास वर्ष हो रहे थे लेकिन प्र”kkl u vkj vnkyr dk dke epydkyhu rkj&rjhds l s py jgk FkkA okju&gfLVXl ds जमाने में यह महसूस किया गया कि इस्लाम धर्म और शास्त्रों के पठन-पाठन के लिये और अरबी-फारसी और, उर्दू के उन्नयन के लिये कलकत्ता में कोई विद्यालय नहीं है, vr% jktk jkeekgu jk; dh l gk; rk से हेस्टिंग्स ने 1780 ई0 में कलकत्ता में ‘मदरसा dh LFkkuk dhA<sup>3</sup>

bl h chp l u~1817 ea fgUnq dknyst] l u~1818 ea Jhjkeij ea cfiVLV fe”ku कॉलेज, 1820 में कलकत्ता में बि”ki dknyst dh LFkki uk dh x; hA<sup>3</sup>

1818 ई. में लॉर्ड ब्रिस्टल ने भारत में स्कूलों के लिए पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता का प्रस्ताव रखा।

1818 ई. में लॉर्ड ब्रिस्टल ने भारत में स्कूलों के लिए पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता का प्रस्ताव रखा।

समाज सुधार के विषय में भी इसका प्रभाव पड़ा।

स्वामी विवेकानन्द तथा रामकृष्ण मिश्र

स्वामी विवेकानन्द तथा रामकृष्ण मिश्र

स्वामी विवेकानन्द तथा रामकृष्ण मिश्र

मल्लिकार्जुन 1893 एा फ़ाँदक़ा एा ग़ज़ /केज़ धि । । न एा हक़ फ़ि; क़ वक़ि वि उहि फ़) रक़  
पूर्ण विवेचना द्वारा लोगों बहुत प्रभावित किया। उनके भाषण का तत्व यह था कि हमें  
हक़ि रदक़न रफ़क़ व/; क़ेक़न दस चिप , द लोल्फ़क़ । रग़्यु लफ़क़ि र दजुक़ ग़ा

फ़ोडकुलन एा दक़बज़ ज़क़तुह्रद । उन्हींक़ उघा फ़न; क़ा फ़ोज़ हक़ि मल्लिक़ारुस वि एा सुस[क़ा रफ़क़  
भाषणों द्वारा नई पीढ़ी में अपने भूतकाल में एक नवीन आत्मगौरव की भावना जगाई और  
हक़ि रन; । लदफ़र एा उ; क़ फ़ो”क़ि ] तथा भारत के भविष्य एा , द उ; क़ वक़ेफ़ो”क़ि । , द  
बार सुभाषचन्द्र क़ि एा सु दग़क़ फ़क़ि ”तग़क़ि रद क़क़्य दक़ । क़क़ ग़े फ़ोडकुलन दक़  
आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का “आध्यत्मिक पिता” कह सकते हैं।” उनके स्थापित किये  
गये रामकृष्ण मि”न शीघ्र ही लोक सेवा तथा समाज सुधार के केन्द्र बन गये।<sup>7</sup>

उन्नीसवी शताब्दी के प्रायः सभी बौद्धिकों की मान्यता थी कि उस शताब्दी में  
ि पफ़र । क़क़तद । फ़क़क़ा वक़ि /क़क़ेड फ़ो”क़ि क़ा एा िख़र दस ज़लरस एा ज़क़मः ववदक़, ।  
क़ग़नक़न वक़ि एा रदक़ एा उ; फ़दररो दस फ़ोडक़ । दक़ क़क़/क़र फ़द; क़ वक़ि वक़ि ददक़क़न  
रफ़क़ /क़क़ेड ख़क़ा दस । हक़रो दस दक़. क़ यक़क़ा एा , द हक़; तफ़र : फ़क़फ़रक़ एा वि उह  
तमः तैक़ा तफ़रक़न । सु दय एा रदक़ वक़ि वक़क़ दस फ़ि ) क़क़ा दस वक़/क़ि । ज़ ?क़. क़  
धि तक्रि फ़क़ा क़यद बल फ़ि, फ़क़ि फ़द बल । स । क़त फ़ोहक़फ़र ग़क़क़ फ़क़ वक़ि यक़क़ा एा  
न”क़क़दर धि हक़क़ उघि । एा सु ि क़रि फ़क़ा । र्हि फ़क़ वक़ि ”क़”हत्या को प्रत्येक शास= दक़  
दृष्टि में हत्या माना जाता था। साथ ही यह भी स्वीकार किया गया था कि दुनिया में  
फ़द । ह हक़ न”क़ एा सु फ़त । धि उक़ि ; क़ि वक़क़ु एा मच ग़क़ि दहक़ हक़ । क़; क़र उघा ग़क़ । द्रहा  
इस प्रकार उन्नीसवी शताब्दी के भारत की सामाजिक तथा धार्मिक प्रथाएँ एक पतन”क़्य  
। क़त दस य{क़. क़ा दस : । क़ एा न[क़ि तक्रि फ़क़] फ़तुधि फ़ो”षताएँ थी प्रतिबंध, अंधवि”क़ि ]  
। क़क़तद वक़क़ि । क़/क़क़ि ] /क़क़/क़क़ वक़ि वक़क़ फ़ु; फ़क़न । बल दस लक़क़ु । ज़ लक़/क़क़  
फ़ो”क़ि ] वक़क़ि रद । गु”क़क़क़ वक़ि एा क़ु; ख़क़ो धि लफ़क़ि उक़ धि दक़”क़”क़ धि तक्रि  
जघि फ़क़ा <sup>8</sup>

फ़क़व”क़ शासन के पूर्व भारत का सामाजिक स्वरूप अपरिवर्तन”क़्य , एा लफ़क़ि फ़क़ा  
फ़क़व”क़ ज़क़त धि लफ़क़ि उक़ दस । क़”क़- & । क़”क़; । ह; रक़ , एा । लदफ़र दक़ । क़क़ & । द क़ि  
ग़क़ि फ़त । । सुतक़फ़र वक़; ह । वक़थि दस फ़”क़क़ दक़ वफ़ुक़; । क़; एा क़; स तकुस । स , द  
, । स एा दक़ मन्; ग़क़ि फ़त । सु वक़थि एा फ़”क़क़ । क़र दज । क़”क़; । क़ग़; दक़ व/; ; उ

fd; k] rFkk Hkkjrh; l ekt , oa l dfr dh [kkfe; ka dk irk yxk; kA id ds fodkl l s  
 ofpkjd vknku&inku ea rsth vk; hA ykxka ea l kekftd xfr”khyrk vk; hA

uotkxj.k ds i = if=dvka ea Hkkjrh; rk vksj vk/kfudrk jktuhfr vksj /kkfed  
 l kekftd ekl; rkvka dks ijLij vU; kb; kfpr rFkk ij d ekuk x; kA ml us thou dks  
 समग्र मानकर राष्ट्रीय भावना को विस्तृत फलक प्रदान किया।<sup>9</sup> l Hkh idkj ds /keZ , oa  
 राजनीति की परस्पर संबंध मानते हुए इन्हें राष्ट्रीयता का मूलधार बताया गया gS ; g Hkh  
 dkbZ /keZ ea /keZ gS tks jktuhfrd cfu; kn ij ugha gS ij ftl dk yxko jktuhfrd  
 विषयों से बिल्कुल नहीं है, बल्कि इस तरह का मजबूत कौनिपत की जड़ को उखाड़ देता  
 gS vki l dks l gkukfir c/kj i e] n”k ; k tkfr dh rjDdh dk mi ; ks vkfn dk /keZ  
 dk i e] k vx gS vksj ; gh ml”y राजनैतिक विषयों का भी gA<sup>10</sup>  
 ; x caky vkUnksyu rFkk gujh fofo; u Mj hft ; ks %&

बंगाल में इस आन्दोलन की शुरुआत विल{.k.k ifrHkk ds /kuh&gguh fofo; u  
 Mj hft ; ks के द्वारा किया गया। 1809 ई0 में जन्में डेरोजियो 1826 ई0 में कलकत्ता में एक  
 ?kMh foØrk ds l kFk ea vk; A

13वीं शताब्दी के तीसरे और चौFks n”kd ea caky ds cf) thfo; ka ea , d mxDknh  
 idfr dk tle gvkA ; g idfr jktk jkeekgu jk; ds fopkjka l s Hkh T; knk vk/kfud  
 , d Økfrdkjh FkA bl vkUnksyu dks gh \*; x caky vkUnksyu^ ds uke l s tkuk tkrk  
 gA 1826 bD l s 1831 bD rd dknlyt ea , d ik/; ki d ds : lk ea dk; Z djus okys  
 vkxk Hkkjrh; ] gujh fofo; u Mj hft ; ks bl vkUnksyu ds idrd , oa usrk FkA  
 vk/; kfRed mlUfr vksj l ekt l qkkj ds fy; s mlgksa ^, dMfed , l kfl , ”ku\* vksj  
 ^l kd kbVh Qk] n , Dohth”ku vkND fgUnq , l kfl , ”ku^ tS s dbZ l xBuka dh LFkki uk  
 dhA mlgksa ^, dMfed , l kfl , ”ku^ vksj ^l kd kbVh n , Dohth”ku vkND fgUnq  
 , d kfl , ”ku^ tS s dbZ l xBuka dh LFkki uk dhA mlgksa ^, xyka bf.M; u^ fgUnq  
 , l kfl , ”ku] cafgr l Hkk^ vksj \*fMofVx Dyc^ dk Hkh xBu fd; kA ; |fi ; g  
 vkUnksyu T; kn l Qy ugha jgk fdUnq bdl s ckotw Hkh bl us jktk jkeekgu jk; ds  
 fopkjka dks vkxs c<k; k rFkk dbZ {ks= ea i”ka uh; dk; Z fd; A l gUnukFk cutHz us bl  
 vkUnksyu ds caky ea vk/kfud l i lu dk tud dgk gA

b'ojplnz fo |kl kxj , d ifl ) fo) ku , d l ekt l qkkjd FkA fo |kl kxj us fo/kok i p'ookg ds fy, dbz l "kDr v'kUnsyu pyk; kA m'ugkua L=h f"kk dks i kRl kgu nus grq v'fkd iz Ru fd; A mudk 35 c'fydk fo |ky; ka l s l c'rk FkA 1840 , oa 1850 ds n"kd ea L=h f"kk ds {k= ea pyk; s x; s l "kDr v'kUnsyu ds QyLo: lk ghs कलकत्ता में 'बैथु Ldny^ dh LFkki uk dh FkhA l ekt l qkkj ds fofHku {k=ka ea b'ojplnz fo |kl kxj dk ; kxnku v'Lej.kh; gA<sup>11</sup>

vr% ge कह सकते है कि 7वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में नवजागरण के पृष्ठभूमि में l keftd /kkfezd l qkkj v'kUnsyuka dh egRo i w'kz Hkfedk jghA c'ky ea jktk jke ekgujk; v'k muds cge l ekt] n'bnz ukFk Bkdj v'k mudk vk; l cge l ekt] d's'oplz l u v'k mudk i k'थना समाज, रामकृष्ण परमहंस औj foodkulln b'ojplnz विद्यासागर आदि। उत्तर भारत में स्वामी दयानंद सरस्वती और उनके आर्य समाज आदि ds }kjk c'ky l fgr Hkjr ds l Hk i k'urka ea l keftd /kkfezd {k= ea l qkkj v'kUnsyuka ds ek; e l s u; h pruk dks fodfl r djus dk iz kl fd; kA<sup>12</sup>

l nHkz l iph %&

- 1- ch0, y0 x'kj rFk ; "ki ky] v'k/kuud Hkjr dk b'fgrkl 2003
- 2- fo"oas, राममोहन समीक्षा, पृष्ठ 214
- 3- मुखोपाध्याय, राममोहन ओ तत्कालिन समाज और साहित्य पृष्ठ-99-100
- 4- ch0, y0x'kj rFk ; "ki ky v'k/kuud Hkjr dk b'fgrkl 2003] पृष्ठ संख्या-273
- 5- gjfu; l h0, p0 bf.M; u u's'kuy , .M l k'y fjQkē
- 6- जॉन्स किथ आर्य धर्म हिन्दु कानसिम्युनस इन 19वीं शताब्दी
- 7- fofi u plnz v'k/kuud Hkjr i f'ly"ars, नयी दिल्ली 2009, पृष्ठ-76
- 8- gfj"चन्द्र, चंद्रिका, दिसम्बर 1884, पृष्ठ-3
- 9- v'ny x'rk] LVjht bu c'kल रेनासांस, पूर्वोद्धत पृष्ठ-43
- 10- हिन्दी प्रदीप, अगस्त सितम्बर 1899, पृष्ठ सं0-14-15
- 11- हिन्दी प्रदीप, जुलाई 1889, पृष्ठ-32-33
- 12- अनिल शील, दि इमजेस ऑफ इण्डियन ने"ku'fyTe] v'k/kj i p'dyk gfj; k.kk 1968 पृष्ठ-16